Golden Reseach Thought

Volume - 6 | Issue - 5 | November - 2016

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

4.6052(UIF) 2231-5063

भारत – अमेरिका आर्थिक संबंध

डॉ. नेहा निरंजन

नेहा निरंजन

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान एवं लोकप्रशासन विभाग ,डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

सारांश :– अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में राजनीतिक एवं कूटनीतिक संबंधों के अलावा आर्थिक संबंधों पर विशेष जोर दिया जा रहा है। वास्तव में, आज का विश्व आर्थिक सहयोग के आधार पर ही टिका हुआ है क्योंकि आर्थिक सहयोग ही वह आधार भूमि तैयार करता है जिस पर दो देशों के राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संबंधों की आधारभूत....पृष्ठ क्र. –01

Editor - in - Chief - Dr. T. N. SHINDE

Golden Research Thoughts

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN NO:-2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Vol.- 6, Issue - 5, November -2016

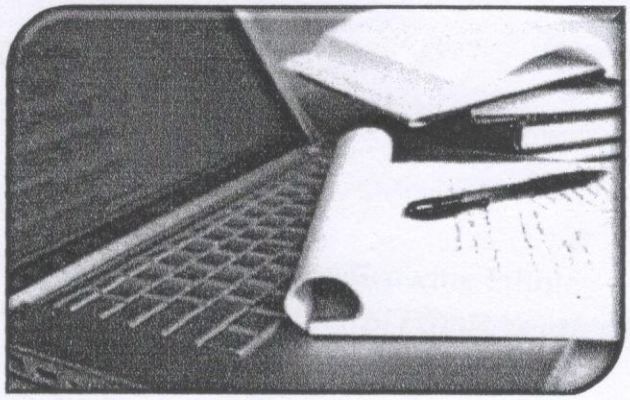

Sr. No	Title And Name Of The Author (S)	Page No
1	भारत–अमेरिका आर्थिक संबंध डॉ. नेहा निरंजन	1
2	बीड जिल्हयातील नियंत्रित बाजारपेठांचे कार्ये डॉ. ढास. डी. के. , श्री. दादासाहेब जयवंतराव काटे	5
3	''माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) आयामों के सन्दर्भ में अध्ययन'' योगेश्वर प्रसाद शर्मा , डॉ. सतीश कुमार सिँह	8
4	महाराष्ट्रीय लोकसंगीत–एक दृष्टीक्षेप सहा.प्रा.उत्तरा रतनसिंग तडवी	12
5	डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कथाएँ प्रो. डॉ. संगीता जगताप	14
6	Sanitation And Women Dr. Kalavati H Kamble and Prof. S.A.Kazi	17
7	A Research Study Of Routing Protoccol In Manets: AODV, DSR, TORA Santosh Madhusing Chavan	22

ISSN: 2231-5063 Impact Factor :4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 5 | November - 2016

GRT Golden Research Thoughts

भारत–अमेरिका आर्थिक संबंध

डॉ. नेहा निरंजन
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान एवं लोकप्रशासन विभाग ,
डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

सारांश
अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में राजनीतिक एवं कूटनीतिक संबंधों के अलावा आर्थिक संबंधों पर विशेष जोर दिया जा रहा है। वास्तव में, आज का विश्व आर्थिक सहयोग के आधार पर ही टिका हुआ है क्योंकि आर्थिक सहयोग ही वह आधार भूमि तैयार करता है जिस पर दो देशों के राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संबंधों की आधारभूत संरचना का निर्धारण होता है।

भारत और अमेरिका के आर्थिक संबंधों का विश्लेषण इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि अमरीका विकसित राष्ट्रों के अग्रणी है जबकि भारत विकासशील देशों में प्रमुख है, जो अपने विकास के लिए विकसित देशों से सहयोग की आवश्यकता है। बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में चीन की बढ़ती ताकत अमरीका के लिए सबसे बड़े प्रतिद्वंदी के रूप में दिखाई दे रही है। अमरीका की आर्थिक मंदी ने जहाँ उसे कुछ कमजोर किया है वही चीन का व्यापार तेजी से बढ रहा है। एशिया प्रशांत के क्षेत्रों में उसकी पहुँच को रोकने के लिए आवश्यक है कि अमरीका भारत के साथ सहयोग करे। भारत–अमरीका आर्थिक सहयोग दोनों राष्ट्रों के राष्ट्रीय हितों की महती आवश्यकता है। इन्हीं आर्थिक संबंधों के विकास पर प्रकाश डालना इस शोध–पत्र का उद्देश्य है।

मुख्य बिन्दु – उदारवाद, सुदृढ़ वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था, अंतरनिर्भरता, नव उपनिवेशवाद, 21वीं सदी के लिए दृष्टिकोण : भारत अमरीका संबंध, वार्षिक वृद्धि दर, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश।

भारत विश्व में चीन के बाद सबसे अधिक आबादी वाला राष्ट्र है। यह विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र और विधि के शासन तथा प्रतिनिध्यात्मक सरकार के प्रति दृढता से प्रतिबद्ध है। यहाँ एक मजबूत और क्रियाशील प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था है। एक राष्ट्र–राज्य के रूप में भारत सैकड़ों जातियों के समूह, धार्मिक सम्प्रदाय और सामाजिक व्यवस्थाओं को प्रस्तुत करता है। अमेरिका के टेक्सास, अलास्का और कैलीफोनिया के संयुक्त क्षेत्र से भी भारत बड़ा है। भारत जन–सांख्यिकीय, भौगोलिक और जलवायु विज्ञान संबंधी क्षेत्रों में भी विश्वास एवं महान राष्ट्र है। इसके पश्चिम में रेगिस्तान, पूर्वोत्तर में घने जंगल है, उत्तर में हिमालय की ऊँची–ऊँची चोटियाँ है तो दक्षिण में विशाल पठार एवं भारत के मध्य में गंगा का उपजाऊ मैदान है।

भारत विश्व में सबसे बड़ा और तेजी से विकसित अर्थव्यवस्था वाला देश है। पिछले एक दशक का मूल्यांकन करने पर हम पाते है कि 2006 में भारत का वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद जीडीपी 8–9 प्रतिशत रहा। यह वृद्धि दर एशियाई देशों में चीन के बाद दूसरी सबसे बड़ी दर है। भारत एशिया में जापान और चीन के बाद तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। भारत की हाल की यह आर्थिक सफलता आमतौर पर इसके आंतरिक और बाह्य कारकों के संयोजन पर आधारित है। आंतरिक रूप से एक श्रृंखला के रूप में भारत के विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में ठोस विकास के लिए आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को प्रेरित किया गया है और बाह्य रूप से भारत द्वारा उदारवादी नीतियाँ अपनाने के पश्चात् अब वह एक सुदृढ़ वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था का रूप ले रहा है परिणामस्वरूप भारत में विदेशी मुद्रा का आदान–प्रदान तेजी से हो रहा है जिससे भारत के व्यापार एवं निवेश में बढ़ोत्तरी हुई है।

हाल ही में हुई भारतीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि के बावजूद भविष्य की समृद्धि के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था के कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा/जैसा कि सबसे पहले, हॉलाकि राष्ट्र निर्माण और सेवा क्षेत्रों में तेजी से वृद्धि हुई है किन्तु यहाँ रोजगार सृजन अपेक्षाकृत कम हुआ है। दूसरा, इतने वर्षों के अनुभव के